5 रामधारीसिंह 'दिनकर'

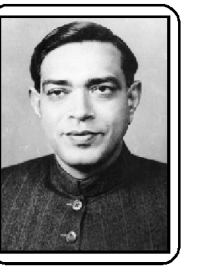

रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म 30 सितम्बर, 1908 ई० में बिहार राज्य के मुंगेर जिले के सिमरिया ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बी०ए० की परीक्षा पास करने के पश्चात् इन्होंने कुछ दिनों के लिए उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक का कार्य सँभाला। उसके बाद ये सरकारी नौकरी में चले आये। इनकी सरकारी सेवा अवर-निबंधक के रूप में प्रारम्भ हुई। बाद में ये उप निदेशक, प्रचार विभाग के पद पर स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद तक कार्य करते रहे। तदनन्तर

इन्होंने कुछ समय तक बिहार विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। सन् 1952 ई० में ये भारतीय संसद के सदस्य मनोनीत हुए। कुछ समय ये भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। उसके पश्चात् भारत सरकार के गृह-विभाग में हिन्दी सलाहकार के रूप में एक लम्बे अर्से तक हिन्दी के संवर्द्धन एवं प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत रहे। इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। सन् 1959 ई० में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया तथा सन् 1962 ई० में भागलपुर विश्वविद्यालय ने डी० लिट्० की उपाधि प्रदान की। प्रतिनिधि लेखक व कवि के रूप में इन्होंने अनेक प्रतिनिधि मण्डलों में रहकर विदेश यात्राएँ कीं। 'दिनकरजी' की असामयिक मृत्यु 24 अप्रैल, 1974 ई० को हुई।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**30 सितम्बर, 1908 ई०।
- **जन्म-स्थान–**सिमरिया (मुंगेर), बिहार।
- **शिक्षा–**बी.ए.।
- **मृत्यु–**24 अप्रैल, 1974 ई०।
- **लेखन विधा–**निबन्ध, संस्कृति ग्रंथ, आलोचना, काव्य ग्रंथ।
- **भाषा–**शुद्ध साहित्यिक, संस्कृतनिष्ठ, प्रांजल, प्रौढ़ तथा सुबोध खड़ीबोली।
- **शैली–**भावात्मक, समीक्षात्मक, सूक्ति-परक तथा विवेचनात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ–**रेणुका, रसवन्ती, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, कुरुक्षेत्र, उर्वशी, अर्द्धनारीश्वर, उजली आग, संस्कृति के चार अध्याय, मिट्टी की ओर, शुद्ध कविता की खोज।
- **साहित्य में स्थान–**इन्हें हिन्दी साहित्य जगत में 'राष्ट्रकवि' की ख्याति प्राप्त थी। आपको 'पद्मभूषण' व 'ज्ञानपीठ पुरस्कारों' से सम्मानित किया गया था।

इनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार कविता है तथा देश और विदेश में ये मुख्यतः कवि रूप में प्रसिद्ध हैं। लेकिन गद्य-लेखन में भी ये आगे रहे और अनेक अनमोल ग्रन्थ लिखकर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की। इसका ज्वलन्त उदाहरण है 'संस्कृति के चार अध्याय', जो साहित्य अकादमी से पुरस्कृत है। इसमें इन्होंने प्रधानतया शोध और अनुशीलन के आधार पर मानव सभ्यता के इतिहास को चार मंजिलों में बाँटकर अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त 'दिनकर' के स्फुट, समीक्षात्मक तथा विविध निबन्धों के संग्रह हैं, जो पठनीय हैं, विशेषतः इस कारण कि उनसे 'दिनकर' के कवित्व को समझने-परखने में यथेष्ट सहायता मिलती है। इनके गद्य में विषयों की विविधता और शैली की प्राञ्जलता के सर्वत्र दर्शन होते हैं। भाषा की भूलों के बावजूद शैली की प्राञ्जलता ही 'दिनकर' के गद्य को आकर्षक बना देती है। इनका गद्य-साहित्य काव्य की भाँति ही अत्यन्त सजीव एवं स्फूर्तिमय है तथा भाषा ओज

से ओत-प्रोत है। इन्होंने काव्य, संस्कृति, समाज, जीवन आदि विषयों पर बहुत ही उत्कृष्ट लेख लिखे हैं। दिनकर जी के गद्य साहित्य में मुख्य रूप से आलोचनात्मक, भावात्मक, विवेचनात्मक, सूक्ति शैली के दर्शन होते हैं।

प्रमुख कृतियाँ–'प्रणभंग', 'रेणुका', 'रसवन्ती', 'द्वन्द्वगीत', 'धूप-छाँह', 'हुंकार', 'बापू', 'एकायन', 'इतिहास के आँसू', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रश्मिरथी', 'नील कुसुम', 'नील के पत्ते', 'सीपी और शंख', 'कुरुक्षेत्र' तथा 'उर्वशी'।

निबन्ध-संग्रह–'अर्द्धनारीश्वर', 'रेती के फूल', 'बट पीपल', 'उजली आग', 'विवाह की मुसीबतें' आदि।

दार्शनिक और सांस्कृतिक निबन्ध–'धर्म', 'भारतीय संस्कृति की एकता', 'संस्कृति के चार अध्याय'।

आलोचना–'मिट्टी की ओर', 'शुद्ध कविता की खोज', 'काव्य की भूमिका', 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण' आदि।

यात्रा–वृत्तान्त–'देश-विदेश', 'मेरी यात्राएँ'।

रेडियो रूपक–'हेराम'।

दिनकर के संस्मरण–'शेष–निःशेष'।

दिनकर जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली है। इन्होंने तद्भव और देशज शब्दों तथा मुहावरों और लोकोक्तियों का भी सहज स्वाभाविक प्रयोग किया है। इनकी शैलियों में विवेचनात्मक, समीक्षात्मक, भावात्मक, सूक्तिपरक शैली प्रमुख रूप से हैं।

'ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से' पाठ लेखक की 'अर्द्धनारीश्वर' पुस्तक से संकलित किया गया है। लेखक ने ईर्ष्या की उत्पत्ति का कारण एवं उससे होनेवाली हानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। साथ ही लेखक ने ईर्ष्या से विमुक्ति का साधन भी प्रस्तुत किया है।

हिन्दी साहित्य में स्थान–'संस्कृति के चार अध्याय' दिनकर जी की एक प्रमुख कृति है। यह हिन्दी गद्य साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है। आप मानवता के पोषक तथा शोषण के विरोधी हैं। इन्होंने समाज, संस्कृति और धर्म में व्याप्त रूढ़ियों का खण्डन करके जन-मानस में यथार्थ राष्ट्रीयता का भाव पिरोने का प्रयत्न किया। राष्ट्रीयता की भावना पर आश्रित इनका साहित्य, भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है। दिनकर जी की गणना देश के श्रेष्ठ साहित्यकारों में की जाती है।

●●

ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से

मेरे घर के दाहिने एक वकील रहते हैं, जो खाने-पीने में अच्छे हैं, दोस्तों को भी खूब खिलाते हैं और सभा-सोसाइटियों में भी काफी भाग लेते हैं। बाल-बच्चों से भरा-पूरा परिवार, नौकर भी सुख देनेवाले और पत्नी भी अत्यन्त मृदुभाषिणी। भला एक सुखी मनुष्य को और क्या चाहिए?

मगर वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन-सा दाह है, इसे मैं भली-भाँति जानता हूँ। दरअसल उनकी बगल में जो बीमा एजेण्ट हैं, उनके विभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को भगवान् ने जो कुछ दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दीखता। वे इस चिन्ता में भुने जा रहे हैं कि काश, एजेण्ट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क-भड़क मेरी भी हुई होती।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

एक उपवन को पाकर भगवान् को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं लेना और बराबर इस चिन्ता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है, जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझने लगता है।

ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। दूसरों की निन्दा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जायँगे और जो स्थान रिक्त होगा, उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा।

मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न आगे होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निन्दा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाये तथा अपने गुणों का विकास करे।

ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे, जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते हैं कि कहाँ सुननेवाला मिले और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। अगर जरा उनके अपने इतिहास को देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जबसे उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि वे निन्दा करने में समय व शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज इनका स्थान कहाँ होता?

चिन्ता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचण्ड चिन्ता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी ही खराब हो जाती है, किन्तु ईर्ष्या शायद चिन्ता से भी बदतर चीज है; क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुण्ठित बना डालती है।

मृत्यु शायद, फिर भी श्रेष्ठ है, बनिस्बत इसके कि हमें अपने गुणों को कुण्ठित बनाकर जीना पड़े। चिन्तादग्ध व्यक्ति समाज की दया का पात्र है, किन्तु ईर्ष्या से जला-भुना आदमी जहर की एक चलती-फिरती गठरी के समान है, जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष नहीं है, प्रत्युत् इससे मनुष्य के आनन्द में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय का उदय होता है, सामने का सुख उसे मद्धिम-सा दीखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानो वे देखने के योग्य ही न हों।

आप कहेंगे कि निन्दा के बाण से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और यह आनन्द ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर, यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है और यह आनन्द भी दैत्यों का आनन्द होता है।

ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है, जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है; क्योंकि प्रतिद्वन्द्विता से मनुष्य का विकास होता है, किन्तु अगर आप संसारव्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे। मगर, याद रखिये कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकुलिस से।

ईर्ष्या का एक पक्ष, सचमुच ही लाभदायक हो सकता है, जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वन्द्वी का समकक्ष बनाना चाहता है, किन्तु यह तभी सम्भव है, जब कि ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती हो, वह रचनात्मक हो। अक्सर तो ऐसा ही होता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज है जो उसके भीतर नहीं है, कोई वस्तु है जो दूसरों के पास है। किन्तु वह यह नहीं समझ पाता कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए और गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी, मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि ये लोग भी अपने आपसे शायद वैसे ही असन्तुष्ट हों।

आपने यही देखा होगा कि शरीफ लोग यह सोचते हुए अपना सिर खुजलाया करते हैं कि फलाँ आदमी मुझसे जलता है, मैंने तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा और अमुक व्यक्ति इस कदर मेरी निन्दा में क्यों लगा हुआ है? सच तो यह है कि मैंने सबसे अधिक भलाई उसी की की है।

यह सोचते हैं—मैं तो पाक-साफ हूँ, मुझमें किसी व्यक्ति के लिए दुर्भावना नहीं है, बल्कि अपने दुश्मनों की भी मैं भलाई ही सोचा करता हूँ। फिर ये लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हैं? मुझमें कौन-सा वह ऐब है, जिसे दूर करके मैं इन दोस्तों को चुप कर सकता हूँ?

ईश्वरचन्द विद्यासागर जब इस तजुरबे से होकर गुजरे, तब उन्होंने एक सूत्र कहा 'तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।'

और नीत्से जब इस कूचे से होकर निकला, तब उसने जोरों का एक ठहाका लगाया और कहा कि 'यार, ये तो बाजार की मक्खियाँ हैं, जो अकारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं।'

ये सामने प्रशंसा और पीठ पीछे निन्दा किया करते हैं। हम इनके दिमाग में बैठे हुए हैं, ये मक्खियाँ हमें भूल नहीं सकतीं और चूँकि ये हमारे बारे में बहुत सेवा करती हैं, इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं।

ये मक्खियाँ हमें सजा देती हैं हमारे गुणों के लिए। ये ऐब को तो माफ कर देंगी, क्योंकि बड़ों के ऐब को माफ करने में भी शान है, जिस शान का स्वाद लेने के लिए ये मक्खियाँ तरस रही हैं।

जिनका चरित्र उन्नत है, जिनका हृदय निर्मल और विशाल है, वे कहते हैं—'इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना? ये तो खुद ही छोटे हैं।'

मगर जिनका दिल छोटा और दृष्टि संकीर्ण है, वे मानते हैं कि जितनी भी बड़ी हस्तियाँ हैं, उनकी निन्दा ही ठीक है। और जब हम प्रीति, उदारता और भलमनसाहत का बरताव करते हैं, तब भी ये यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं और हम चाहे उनका जितना उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।

दरअसल, हम जो उनकी निन्दा का जवाब न देकर चुप्पी साधे रहते हैं, उसे भी वे हमारा अहंकार समझते हैं। खुशी तो उन्हें तभी हो सकती है, जब हम उनके धरातल पर उतरकर उनके छोटेपन के भागीदार बन जायँ।

सारे अनुभवों को निचोड़कर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा, 'आदमी में जो गुण महान् समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।'

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि 'बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकान्त की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान् है, उसकी रचना और निर्माण बाजार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करनेवाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।' जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वहाँ एकान्त है।

यह तो हुआ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय, किन्तु ईर्ष्या से आदमी कैसे बच सकता है?

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आयेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

● **रामधारीसिंह 'दिनकर'**

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक ने ईर्ष्या का अनोखा वरदान किसे कहा है?

(ख) एक उपवन को पाकर भगवान् को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं लेना और बराबर इस चिन्ता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, यह ऐसा दोष है, जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र और भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझने लगता है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक ने ईर्ष्यालु व्यक्ति के चरित्र के भयंकर होने का क्या कारण बतलाया है?

(ग) ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। दूसरों की निन्दा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जायँगे और जो स्थान रिक्त होगा, उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा। **(2016CG)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति निन्दाप्रिय क्यों होता है?

अथवा **ईर्ष्यालु और निन्दक का क्या सम्बन्ध है?**

(घ) मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निन्दा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा अपने गुणों का विकास करे। **(2016CF, 17AA, 19AE,AG)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निन्दा का प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा **मनुष्य के पतन का क्या कारण होता है?**

(b) मनुष्य की उन्नति कैसे हो सकती है?

अथवा **मनुष्य की उन्नति का क्या कारण बताया गया है?**

(ङ) ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे, जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते हैं कि कहाँ सुननेवाला मिले और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। अगर जरा उनके अपने इतिहास को देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जबसे उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। **(2020MC)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्या का क्या काम है? वह सबसे पहले किसे जलाती है?

(च) श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। अगर जरा उनके अपने इतिहास को देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि वे निन्दा करने में समय व शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज इनका स्थान कहाँ होता?

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) निन्दा का निन्दक पर प्रभाव बताइए।
***अथवा* मनुष्य की उन्नति का क्या कारण बताया गया है?**

(छ) ईर्ष्या का एक पक्ष, सचमुच ही लाभदायक हो सकता है, जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वन्द्वी का समकक्ष बनाना चाहता है। किन्तु यह तभी सम्भव है, जबकि ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती हो, वह रचनात्मक हो। अक्सर तो ऐसा ही होता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज है जो उसके भीतर नहीं है, कोई वस्तु है, जो दूसरों के पास है। किन्तु वह यह नहीं समझ पाता कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए और गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी, मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि ये लोग भी अपने आपसे शायद वैसे ही असन्तुष्ट हों। **(2016CE)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति क्या महसूस करता है?
अथवा **ईर्ष्या का लाभदायक पक्ष क्या है?**

(ज) आप कहेंगे कि निन्दा के बाण से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और यह आनन्द ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर, यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है और यह आनन्द भी दैत्यों का आनन्द होता है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है?

(झ) चिन्ता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचण्ड चिन्ता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी ही खराब हो जाती है किन्तु ईर्ष्या शायद चिन्ता से भी बदतर चीज है, क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुण्ठित बना डालती है।

मृत्यु शायद, फिर भी श्रेष्ठ है, बनिस्बत इसके कि हमें अपने गुणों को कुण्ठित बना कर जीना पड़े। चिन्तादग्ध व्यक्ति समाज की दया का पात्र है, किन्तु ईर्ष्या से जला-भुना आदमी जहर की एक चलती-फिरती गठरी के समान है, जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है। **(2017AG)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) (a) ईर्ष्यालु व्यक्ति की क्या दशा होती है?
(b) ईर्ष्या चिन्ता से भी बदतर चीज क्यों है?

(ञ) ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष नहीं है, प्रत्युत् इससे मनुष्य के आनन्द में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सुख उसे मद्धिम-सा दिखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता है और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानो वे देखने के योग्य ही न हों। आप कहेंगे कि निन्दा के बाण से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और यह आनन्द ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है?

(ट) ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है, क्योंकि भिखमंगा व्यक्ति करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है, जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वन्द्विता से मनुष्य का विकास होता है, किन्तु अगर आप संसारव्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे। मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकुलिस से। **(2017AD)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) (a) कौन किससे प्रतिद्वन्द्विता करता है?
(b) ईर्ष्या से प्रतिद्वन्द्विता का क्या सम्बन्ध है?

(ठ) तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि "बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकान्त की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान् है, उसकी रचना और निर्माण बाजार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।" जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वहाँ एकान्त है। **(2016CA)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है?

(ड) ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आयेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा। **(2020ME)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्या से बचने के लिए क्या उपाय है?

(ढ) जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है? तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जाएगी। अंत में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे। अत: हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति की छूत से बचो।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक ने उपर्युक्त गद्यांश में क्या संदेश दिया है?

2. रामधारीसिंह 'दिनकर' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए। **(2016CB, CD, CG, 18HA, 19AB,AC)**

अथवा रामधारीसिंह दिनकर का जीवन-परिचय दीजिए एवं उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए। **(2017AA, AB, AF 20MB, MG)**

3. दिनकरजी के साहित्यिक अवदान एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए।

4. रामधारीसिंह 'दिनकर' का जीवनवृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

5. लेखक ने दुःख को ईर्ष्या का अनोखा वरदान क्यों कहा है?

6. ईर्ष्या से प्रेरित मनुष्य प्रायः कैसे कामों में प्रवृत्त होता है?

7. ईर्ष्या का निन्दा से कैसा सम्बन्ध है?

8. ईर्ष्यालु मनुष्य दूसरों की निन्दा क्यों करता है?

9. मनुष्य के पतन का मुख्य कारण क्या है?

10. लेखक ने चिन्ता को चिता से भी बदतर क्यों कहा है?

11. जीवन में प्रतिद्वन्द्विता क्यों आवश्यक है?

12. प्रतिद्वन्द्विता का भाव किसके प्रति होना ठीक रहता है?

13. लेखक ने क्यों कहा है कि 'भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता?'

14. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के इस सूत्र का आशय स्पष्ट कीजिए कि 'तुम्हारी निन्दा वही करेगा जिसकी तुमने भलाई की है।'

15. नीत्से ने निन्दा करनेवालों की तुलना मक्खियों से क्यों की है?

16. निन्दकों से बचने का नीत्से ने क्या उपाय बताया है?

17. वाक्य-प्रयोग से निम्नांकित शब्द-युग्मों में परस्पर अन्तर स्पष्ट कीजिए—

(क) प्रतिद्वन्द्वी—प्रतिद्वन्द्विता (ख) मूर्ति—मूर्त

(ग) जिज्ञासा—जिज्ञासु (घ) चरित्र—चारित्रिक

18. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग बताइए—

अभाव, उपवन, सुकर्म, उपकार, अनुशासन, अपव्यय।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

1. रामधारीसिंह 'दिनकर' की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

2. ईर्ष्या से होनेवाली हानियों का एक चार्ट तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

मृदुभाषिणी = मधुर बोलने वाली। **दाह** = जलन; कष्ट। **विभव** = ऐश्वर्य। **दंश** = दाँतों से काटना, डंक मारना। **अनायास** = बिना प्रयास, अपने आप। **ह्रास** = घटने की क्रिया, कमी होना, क्षय, अवनति। **कुण्ठित** = निस्तेज, बाधित, कुन्द किया हुआ। **प्रत्युत्** = बल्कि, वरन्। **प्रतिद्वन्द्विता** = एक वस्तु या एक लक्ष्य के लिए समान बलवालों की लड़ाई। **रसेल** = बर्ट्रेंड रसेल नामक प्रसिद्ध अंग्रेज दार्शनिक, नोबुल पुरस्कार विजेता, 1970 में दिवंगत। **स्पर्द्धा** = ईर्ष्यारहित होकर किसी कार्य या दिशा में किसी दूसरे से आगे बढ़ने की भावना, होड़। **सीजर** = प्रथम शताब्दी ई० पू० का प्रसिद्ध रोमन शासक एवं विजेता। **हरकुलिस** = प्राचीन यूनानी कथाओं में प्रसिद्ध वीर नायक। **ईश्वरचन्द्र विद्यासागर** = बंगाल में उत्पन्न 19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और समाज-सुधारक। **नीत्से** = एक यूरोपीय प्रसिद्ध दार्शनिक व लेखक। **शोहरत** = यश, प्रसिद्धि। **मानसिक अनुशासन** = मन का नियन्त्रण। **रचनात्मक** = निर्माणकारी। **जिज्ञासा** = जानने की इच्छा। **निन्दक** = निन्दा (बुराई) करने वाला। **द्वेष** = कटुता। **फिक्र** = चिन्ता। **श्रोता** = सुनने वाला। **ध्येय** = उद्देश्य। **अपव्यय** = निरर्थक व्यय। **प्रचण्ड** = अतितीव्र; घोर। **बदतर** = अधिक बुरा। **बनिस्पत** = अपेक्षाकृत। **चिन्ता-दग्ध** = चिन्ता में जलता हुआ। **मद्धिम** = हल्का; धीमा। **संसार-व्यापी** = सम्पूर्ण संसार में व्याप्त। **पक्ष** = पहलू। **समकक्ष** = समान। **समकालीन** = अपने समय के। **ऐब** = दोष। **तजुरबे** = अनुभव।

●●